IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

कुसुम अंसल का परछाइयों का समयसार : समाज का दर्पण

Seema Rani, Research Scholar, Dept. of Hindi, Tantia University

Dr. Navneeta Bhatia, Assistant Professor, Dept. of Hindi, Tantia University

हिंदी साहित्य समाज से जुड़ा साहित्य है। सामाजिक समस्याओं को उजागर करना, लोगों के प्रति जागरूक करने में हमारे साहित्यकारों की विशेष रुचि रही है। चाहे यह समस्याएँ गरीब और पिछड़े तबके से संबंधित हो या छुआछूत और भेदभाव से। धर्म,जाति, वर्ग आदि सभी विषयों पर लेखकों ने अपनी लेखनी चलाई है। समाज के उन वर्गों को सामने लाने का प्रयास किया है, जो समाज में होते हुए भी अपना वजूद को बैठे हैं। अनामिका जी के शब्दों में, ''साहित्य उनकी भी जमीन है जिनकी पैसे कोई जमीन नहीं है।''

इन सभी के साथ–साथ समाज का एक ऐसा वर्ग है जो समाज का मुख्य भाग होते हुए भी शोषण पीड़ा का शिकार रहा है। यह वर्ग है नारी वर्ग। हमारी व्यवस्था में या बौद्धिक विचारों में चाहे नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए हो लेकिन अभी भी हमारी सामाजिक व्यवस्था इतनी परिपक्व नहीं हुई है। वास्तव में नारी का जीवन 'यत्र नार्यस्तु पूजन्ते, तत्र देवताः रमन्ते' को सार्थक न करके 'अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी, आँचल में है दूध, आंखों में है पानी' को अधिक सार्थक करता है। नारीवाद या स्त्रीवाद का प्रचलन ही इस बात का प्रमाण है कि आज भी नारी की स्थिति ऐसी नहीं है कि यह कहा जा सके कि वह पुरुषों के समान अपनी पहचान रखती है। आधुनिक समय में चाहे कितने ही परिवर्तन क्यों नहीं आ गए हो लेकिन वास्तव में लोगों के दृष्टिकोण में वह अबला और दया के पात्र ही बनी रह जाती है। लेकिन एक

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यदि कई लोग स्त्रियों कई उड़ान में बाधा बनते है, वहीं कुछ लोग उसे पंख फैलाकर उड़ने के लिए प्रेरित भी करते है।

उद्देश्य –

1. इसे पढ़ने के बाद समाज के विभिन्न पहलुओं से समझ पाएंगे।
2. सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर पाएगें।
3. उपन्यास परछाइयों का समयसार कई विविधता को जान पाएगें।

प्रस्तावना

नारी को अपने अधिकारों के लड़ने और अपने लिए उचित सम्मान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने कई दिशा में हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका कुसुम अंसल जी ने भी सराहनीय काम किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्रियों और समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है लेकिन ऐसा कदापि नहीं है कि उन्होंने स्त्रियों को दीन–हीन, शोषित माना है और समाज को शोषक। उनका साहित्य इस सत्य को आत्मसात करता है कि हमारे समाज में हर प्रकार के लोग पाए जाते हैं। कमलेश सचदेवा के शब्दों में, ''पात्रों के प्रति गहरी सहानुभूति, आत्मीयता, उनके चित्रण में सच्चाई उनकी कहानियों को विश्वसनीय और स्वाभाविक बनती है।

''2 ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो स्त्रियों को आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रेरित करते रहते हैं । कुसुम जी की रचनाओं में विशेष बात यह है कि उन्होंने कहीं भी नारी को कमजोर नहीं पड़ने दिया। नारी सदैव अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान के लिए संघर्षरत रही है। फिर वह चाहे 'तापसी'

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

उपन्यास की मुख्य पात्र तापसी हो, 'परछाइययों का समयसार' की नताशा या 'अपनी–अपनी यात्रा' की पात्र सुरेखा। उपन्यास परछाइयों का समयसार एक साथ जीवन के कई पन्नों को खोल देता है।

कहानी की मुख्य पात्र नताशा मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रोफेसर वेद प्रकाश मेहरा के निर्देशन में शोध कार्य कर रही है। प्रो. वेद मेहरा मध्यवर्गीय साधारण जीवन जीने वाले व्यक्ति हैं लेकिन उनकी पत्नी कामिनी एक उच्च वर्गीय ख्यालों और रहन–सहन की शौकीन अपने पति के साथ निर्वाह नहीं कर पाती। प्रो. वेद मेहरा उसे सुख सुविधा प्रदान करने के हर संभव प्रयास करते हैं परंतु एक दिन कामिनी अपने पुत्र शैलेंद्र का दाखिला अजमेर के में स्कूल में करवा कर हमेशा के लिए घर छोड़कर चली जाती है।

एक अन्य पात्र विद्यावती जो अपने पति की मारपीट का शिकार होती है,फिर मात्र तीन हजार रुपयों में बेच दी जाती है। अमानवीय यातनाओं का जो सिलसिला उस समय शुरू हुआ शायद खत्म ना होता, लेकिन रामनरेश नामक एक व्यक्ति ने उसे एक दिन उसे नर्क से मुक्ति दिलवा दी। जिसके परिणाम में शायद उसे दूसरे दिन ही अपनी जान गँवानी पड़ी।

एक कहानी एक बच्ची, जिसके साथ सामूहिक बलात्कार होता है, की भी है। बदनामी के डर से उसके अपने माता–पिता ही उसका साथ छोड़ देते हैं। उसका नाम बदलकर उसकी पहचान तक को समाप्त कर देते हैं। वहीं अस्पताल में काम करने वाला एक पुरुष नर्स हैरी उसकी देखभाल करता है तथा उसे सदमे से बाहर आने में उसकी मदद करता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

उपन्यास की मुख्य पात्र नताशा का चरित्र स्त्रियों के लिए प्रेरणादायी है। उसका पूर्ण समर्पण मात्र अपनी पढ़ाई के लिए है, परंतु प्रो. वेद मेहरा उसके समक्ष अपने पुत्र शैलेंद्र के लिए विवाह प्रस्ताव रखते हैं। प्रोफेसर वेद मेहरा और उसके पुत्र शैलेंद्र के आग्रहों को स्वीकार करते हुए वह वैवाहिक बंधन में बँध जाती है। घर में ससुर के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए मात्र दो वर्ष ही होते हैं कि उसके पति का एक्सीडेंट हो जाता है। एक वर्ष से अधिक समय वह अस्पताल में शैलेंद्र की सेवा करते हुए तथा अन्य लोगों की सहायता करते हुए बिता देती है। वहाँ डॉ. संदीप, सिस्टर डैरेथी और हैरी जैसे लोग मिलते हैं, जो उसे सदैव आगे बढ़ने के लिए तथा कठिन समय का हिम्मत से सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं। डॉ. संदीप के कहने पर वह डायटीशियन का कोर्स करती है।

शैलेंद्र की मृत्यु के पश्चात भी वह समाज के खोखले रिवाज और विचारों की परवाह ने करते हुए अपने घर, ससुर और अपनी नौकरी के प्रति सचेत रहती है। शैलेंद्र की यादों को ही अपने जीवन का आधार बना लेती है। प्रोफेसर वेद मेहरा द्वारा बार–बार दूसरा विवाह करने की बात पर वह पत्र लिखकर बहुत सुंदर जवाब देती है–

''सिद्धार्थ आधी रात को अपने विवाहिता यशोधरा और दूधमुँहे बच्चे राहुल को छोड़कर चले गए थे।.....जब सिद्धार्थ 'गौतम बुद्ध' के रूप में उसके द्वारा पर आकर खड़े हो गए तब उसने साहस करके पूछा,'' अब आपको सब गौतम बुद्ध कहते हैं। ''

''हां, मैंने सुना है।'' सिद्धार्थ ने कहा ।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

''उसका बुद्ध होने का क्या अर्थ है श्रीमान?'

'"वह, जिसे निर्वाण प्राप्त हो गया है।''

''तो..... आदरणीय 'गौतम बुद्ध' समय के इस अंतराल में हम दोनों को अपना अपना गंतव्य प्राप्त हो गया है.....संसार आपको जानेगा, परंतु मेरा गंतव्य या शिक्षा? उसे कोई समझ पाएगा।''

''वह क्या है बताएंगी आप?''

''हां अवश्य! वह यह है कि एक साहसी और समर्थ महिला को अपनी संपूर्णता प्राप्त करने के लिए किस सहारे की आवश्यकता नहीं होती।''

"वह अपने होने में, अपने आप में ही पूर्ण है।''3

कुसुम जी के अनुसार नारी को मजबूत बनने के लिए किसी और सहारे की जरूरत नहीं होती। उसे जीवन जीने के लिए या पूर्ण होने के लिए किसी भी पुरुष की जीवन में उपस्थिति अनिवार्य नहीं है बल्कि प्रेम और प्रेम में बीते पल ही पर्याप्त है। ''प्रेम,आंतरिक गहरा लगाव, सांसारिक दृष्टि से परे एक दुर्लभ आत्मिक चेतना है। प्रेम दृष्टि से परे है, दृष्टि मुक्ति की राह नहीं हो सकती परंतु प्रेम से बड़ी मुक्ति कोई और नहीं है।''

निष्कर्ष

कुसुम जी मनोविज्ञान में स्नातक रही है उनकी कहानियाँ मनोविज्ञान से प्रभावित रही है। शैलेंद्र शैल के शब्दों में, ''कुसुम जी के पास एक

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

समृद्ध भाषा है, जिसके माध्यम से वह अपना समय सत्य, जिसे वे समयसार कहती हैं, को अभिव्यक्ति देने में सफल हुई है।''4

संदर्भ सूची

1. कुसुमजी कई स्त्रियाँ – वर्ग के कटघरे से बाहर आने की कसक पुस्तक दृ कुसुम अंसल एक मूल्यांकन : कथा साहित्य प्रकाशक– सामयिक बुक्स मुद्रक बी. के. ऑफसेट संस्करण– प्रथम 2022 पृष्ठ संख्या 116

2. धुएं की ईमानदारी और गुलाबी कमीज पुस्तक दृ कुसुम अंसल एक मूल्यांकन : कथा साहित्य प्रकाशक– सामयिक बुक्स मुद्रक बी. के. ऑफसेट संस्करण– प्रथम 2022 पृष्ठ संख्या 148

3. परछाइयों का समयसार, प्रकाशक सामयिक प्रकाशन, मुद्रक : बी. के. ऑफसेट, दिल्ली पृष्ठ संख्या 162–163

4.परछाइयों का समयसार : जीवन का सार तत्त्व उकेरता उपन्यास, पुस्तक दृ कुसुम अंसल एक मूल्यांकन : कथा साहित्य प्रकाशक– सामयिक बुक्स मुद्रक बी. के. ऑफसेट संस्करण– प्रथम 2022 पृष्ठ संख्या 56